RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-03
March-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

यथार्थबोध और स्वातंत्रयोत्तर गीतिनाट्य

डॉ0 अशोक कुमार

उच्च माध्यमिक शिक्षक

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 30 March 2018

Keywords

यथार्थवाद, अभिव्यक्ति, मूल्यांकन

ABSTRACT

यथार्थवादी साहित्य के अन्दर युग–सत्य की नहीं अपितु उसके स्तर विशेष की भी अभिव्यक्ति होती है। परिस्थितियों के अनुसार जो कविता कभी महान समझी जाती थी वह आज केवल अच्छी समझी जाती है और आज से बीस अथवा पचास वर्ष बाद उसकी क्या स्थिति होगी कोई कह नही सकता। किसी भी साहित्य का मूल्यांकन हम उसकी लोकप्रियता के आधार पर करते हैं तथा उसकी ख्याति के द्वारा उससे परिचय प्राप्त करते है। परन्तु पूर्ववर्ती साहित्य का मूल्यांकन इस रीति से थोड़ा कठिन होगा। आज से तीन सौ वर्ष पूर्व जो साहित्य रचा गया था, और उस समय उसकी जो लोकप्रियता एवं प्रशंसा थी वह सम्भव नहीं, क्योंकि आज से तीन सौ वर्ष वहॉ एक ऐसा समाज था जो बहुसंख्यक जनसमूह के शोषण पर अपना जीवन व्यतीत करता था, जैसे कि आज का हमारा अमरिकी समाज है। स्तर जो एक मात्र सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और नैतिक गुणों का माप है, अपने विषय के परिवर्तन के साथ–साथ परिवर्तित होता रहता है।

शोध–आलेख की महत्ता, उद्वेश्य और सामग्री संकलन :

इस शोध–आलेख में स्वातंत्रयोत्तर गीति–नाट्यों के अध्ययन के लिए रचनाकारों की नाट्यकृतियों को ही अध्ययन का आधार बनाया गया है। जिसमें मुख्य रूप से 'संशय की रात', 'अंधायुग' और 'कल्पांतर' केन्द्रिय विषय हैं। अध्ययन से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्रियों का संकलन साहित्य के विभिन्न शोध–ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं से किया गया है। प्रस्तुत शोध–आलेख स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी गीतिनाट्यों में यथार्थबोध का अनुशीलन करता है।

विवेचन :

'संशय की रात' में यथार्थ बोध :

किसी कृति का समकालीनता से जुड़ा होना उसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। 20वीं शताब्दी की उत्तरशती जिन कारणों से सदैव स्मरणीय रहेगी, उसमें एक यह भी है कि उसके प्रायः सभी साहित्यकार समकालीन चेतना से ओतप्रोत हैं तथा उसने हिन्दी कविता की एक रूप और प्रांजल परंपरा को जन्म दिया है। 'संशय की रात' में नरेश मेहता की युद्ध की पीठिका पर लिखी गई सामयिक बोध की रचना है। राम और रावण के ऐतिहासिक युद्ध के माध्यम से उन्होंने वर्तमान विश्वयुद्ध की संभावना और उसके घातक परिणामों का प्रतीक रूप में प्रतिपादन किया है। इतिहास साक्षी हैकि बीसवीं सदी में दो विश्व युद्ध हो चुके हैं। वे जिस युग में जी रहे थे, युद्ध उस युग की भयानक त्रासदी थी, अनेक देश आपस में उलझे हुए थे, भयंकर मार–काट और नरसंहार से विश्व त्रस्त था, हिरोशिमा विस्फोट से पूरी दूनिया मर्माहत और आहत थी। पूरी दूनिया रूस और अमेरिका इन दो ध्रुवों में बंटी थी । कवि इन सबसे भलि–भांति परिचित था। संवेदनशील मनुष्यों को युद्ध की संभवना हमेशा मानवीय मूल्यों के लिए एक भीषण संकट के रूप में दिखता रहा है और इससे मानव समाज हमेशा आहत होता रहा है। किन्तु युद्ध की संभावना अब आधुनिक समाज और विश्व मानव के बीच बढ़ गयी हैं इरान और इराक, भारत और पाक तथा इजराईल और फलिस्तीन के अतिरिक्त अन्य अनेक देशों में इसकी उपस्थिति आज भी देखी जा सकती हे। देश के भीतर उग्रवाद और आतंकवाद उसके आजू–बाजू हैं। प्रतीत होता है कि युद्ध वासी हो गया है। दो महाशक्तियों के परस्पर व्यवहार से भी इस क्षेत्र का क्षितिज का विस्तारण हुआ है। मानव मूल्यों में और समाज में आस्था रखनेवाला हर विवेकशील मनुष्य युद्ध की अनिवार्यता को यत्न करता है। नरेश मेहता के श्रीराम का युद्ध के प्रति जो द्वन्द्व है, वे इसी भावना का द्योतक है। युद्ध की समस्या पर लिखिी गयी रचनाओं में 'संशय की रात' का विशेष महत्व है। कवि ने श्रीराम के द्वन्द्व के माध्यम से युद्ध को निंद्य बताते हुए आधुनिक परिवेश में उसेक जटिल रूप को उभारा है। कवि का अभीष्ट भी युद्ध और उसके जटिल संक्रांत को उठाते हुए शांति, की सत्य का प्रतिष्ठापन है।

भारतीय संस्कृति में श्रीराम ईश्वर के प्रतिरूप माने गये हैं। चिरंतन गुणों से भूषित होने के कारण उन्हें मर्यादा पुरूषोत्तम से भी संज्ञापित किया गया है। शायद इसी कारण राम काव्य–परम्परा में उनके दृढ़ संकल्पों और अटूट निर्णयों को ही तअ तक काव्य विषय के रूप में लिया गया है। कवि ने पहली बार 'संशय की एक रात' में उनलके ईश्वर रूप राम के व्यक्तित्व को छोड़कर सर्वथा विपरीत उनके भीतर उठनेवाले संशय, विकल्प और द्वन्द्व को काव्य विषय बनाया है। कवि की यह एक नयी दृष्टि है। मानव रूपी राम के जीवन में भी निर्णय और अनिर्णय के अनेक क्षण रहे हैं। उन क्षणों को समेट कर उन्होंने राम के वैसे प्रसंगों को सामने लाकर कतिपय ज्वलंत प्रश्न उभारे हैं, जो समकालीन चेतना से जुड़े

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

हुए है। प्रज्ञा पुरूष राम के मन में बार–बार यह द्वन्द्व उठता है कि वे युद्ध करें अन्यथा नही। क्योंकि, वे युद्ध की भयानकता और उसे घातक परिणाम से परिचित हैं वे सोचते हैं कि ये भयानक नरसंहार किसके लिए? केवल राम के लिए या एक व्यक्ति के लिए या फिर एक व्यक्ति की पत्नी के लिए?

'अंधायुग' और यथार्थ बोध :

'अंधायुग' में महाभारत कालीन पुराकथा और उसका समकालीन आधुनिक भावबोध एक साथ संयुक्त है। भारती का प्रयत्न यह रहा है कि मिथक के कंकाल में आज के वास्तविक यथार्थ का रक्स–मांस–मज्जा भरकर उसे वर्तमान का वृत्तचित्र बना दें। आज का मानव जीन संघर्ष की जिस चक्की में पिस रहा है उसके दोनों पार्ट साफ दृष्टिगत होते हैं। युयुत्सु द्विधाग्रस्त मानव मन की पहचान है। आस्था के प्रतीक कृष्ण भी अपना मिथकीय रूप छोड़कर आधुनिक परिवेश में जीवंत हो गए हैं। अश्वत्थामा, युयुत्सु, गांधारी, कृष्ण सभी उन प्रश्नों से जूझ रहे हैं जो आज के संघर्षमय जीवन के बुनियादीसमान है। उनका मिथकीय रूप प्रायः तिरोहित हो गया है। किन्तु, इनके स्थान पर यदि भारती नये पात्रों की कल्पना करते तो महाभारत का अतीत आज वर्तमान संघर्षरत महाभारत का चित्र प्रस्तुत करने में असमर्थ होता है और 'अंधायुग' अपनी सपाट बयानी से असफल कृति बनकर समाप्त हो जाती। किन्तु ऐसा नहीं है। निम्नांकित उद्धरणों से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है।

धर्मवीर भारती ने 'अंधायुग' में समकालीन यथार्थ के बहुशः बिम्ब निर्मित किये हैं। यह बिम्ब समकालीन चेतना के अत्यंत नजदीक है। प्रतीत होता है कि अंधायुग में कवि महाभारत के कथा–संदर्भ द्वारा आधुनिक जीवन–शैली में घटित घटनाओं की प्रासंगिकता, प्रमाणित करना चाहता है। इसमें कवि ने सामूहिक फलक पर होते हुए आत्म–क्षरण का है। इसी समय दो–दो महायुद्ध हुए, जिससे मानव समुदाय की भारी क्षति हुई। इसका सीधा प्रभाव उस युग के समकालीन साहित्य पर पड़ा। 'अंधायुग' उसी की परिणति है। किसी भी राष्ट्र में ऐसे विवेकहीन, न्यायाहीन चरित्र बार–बार आते हैं। अभिप्राय यह कि 'अंधायुग' बार–बार जन्म लेता है और 'अंधायुग' का रचना माध्यम अंधों को ही बनाया है। वे संकेत करते हैं कि आज के युग में इन अंधों की संख्या महाभारत काल की अपेक्षा बहुत अधिक हो गई है। सच तो यह है कि आज का हर राजनीतिक स्वार्थ अंधे का प्रती है। यह भी विचारणीय है कि विवेच्य–नाट्य में कवि आधुनिक जीवन बोध और भारतीय चिंताधारा में निहित नियति की भावपूर्ण संकल्पनाा को विशेष महत्व समकालीन की चेतना के अंतर्गत देते हैं। वे याचक के प्रसंग में इसे स्पष्ट करते हैं। इस प्रसंग में नियतिवाद और भविष्यवाद की ज्योतिषीय परम्परा पर याचक की दो परस्पर विरोधी अवधारणायें प्रस्तुत हुई है। जब याचक कहता है–

''मैं वह भविष्य हूँ
जो झूठा सिद्ध हुआ आज
कौरव की नगरी में
मैने मापा था, नक्षत्रों की गति को
उतारा था अंकों में
मानव नीयति को
अलिखित अक्षर जांचे थे।
मैं था ज्योतिषी दूर देश का।''

तब याचक का ज्योतिषवाद और नियतिवाद उपलब्ध साक्ष्यों के कारण खंडित लगता है। याचक अपने ज्योतिषीय ज्ञान की भ्रमपूर्ण स्थिति को भी स्वीकार करता है। वर्तमान युग में नियतिवाद के प्रति मानव में जो संशय है, उसे कवि यहॉ प्रस्तुत करते हैं। यहॉ नियति के प्रति जो धारणा है उसे नियतिवादी चरित्र के द्वारा ही स्पष्ट करते हैं। नियति और व्यक्ति के बीच का द्वन्द्व 'अंधायुग' में आधुनिक मानव के द्वन्द्व के प्रतिरूप में चित्रित है।

'कल्पांतर' में यथार्थ बोध –

'कल्पांतर' काव्य–रूपक में समकालीन वस्तुबोध की प्रस्तुत एक नये रूप में प्रयोगात्मक तौर पर गई है। इसमें कल्मायनी युग के बदलने का संकेत कवि ने दिया हैं इस तरह का प्रथम प्रयोग छायावाद के अन्तिम दौर में सुमित्रानंदन पंत ने 'युगान्त' लिखकर किया था। 'युगान्त' छायावाद के रोमनी दौर के बदलने के संकेत को लेकर आया था। यह भी कि पंत के 'युगान्त' की अवधारणा मध्यकाल की रूढ़ियों और अमानवीय परंपराओं के विरोध में हुआ था जबकि 'कल्पांतर' की सर्जना आधुनिक युग बोध की वैज्ञानिक तकनीकी–प्रविधि के संदर्भ में हुई है। 'कल्पांतर' में कवि की सूक्ष्म सर्जनशीलता जगह–जगह देखने को मिलती है। सर्जन के संबंध में वे एक कुशल अभियंता की नाई रहे हैं और इस कारण प्रत्येक शब्द में, ध्वनि में वे शब्दों की कारीगरी करते दिखते हैं। 'कल्पान्त' मानवीय समानता और स्वतंत्रता का संदेश लेकर लिखाा गया गीति–नाट्य या रूपक है। 20वीं सदी के आरंभ होने के समय से ही पूरी दूनिया दो ध्रुवों में बॅटी हुई थी। ये दो ध्रुव थे– रूस और अमेरिका। उस अमेरिका और रूस के बीच वर्चस्व को लेकर जो भंयकर संघर्ष की स्थिति थी , उससे पूरी दुनियॉ बेचैन थी। मानव युद्ध मानव ने देखे थे। विनाशकारी अणु–आयुधों का प्रयोग कर अमेरिका जापान को तबाह कर चुका था और विश्व के अनेक देश परस्पर आपस में भिड़े हुए थे। आलोच्य पुस्तक के निवेदन में इस तथ्य को रेखांकित करते हुए गिरिजा कुमार माथुर ने लिखा है कि 20वीं सदी में संससार की प्रगति मानवीय स्वतंत्रता एवं समता को लेकर हुई थी। किन्तु साथ ही इस शताब्दी ने दो भयावह विश्व–युद्ध देखे और तीसरा लम्बा क्षेत्रीय युद्ध कहीं न कहीं चलता रहा है, जिसमें शक्तिशाली राष्ट्रों ने तरह–तरह के मारक–अस्त्र, विनाशक यंत्र, विषैले रसायन इत्यादि और अंतरिक्ष युग के संभावित युद्धों के प्रयोगात्मक परीक्षण किये हैं। इस तरह

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

वर्तमान वैज्ञानिक और तकनीकी विभूति का पूरा इस्तेमाल मानवीय मंगल यानि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मुक्ति के लिए नहीं हो रहा बल्कि विभिन्नन शक्ति संपन्न देशों द्वारा अपना–अपना प्रभुत्व बनाये रखने की प्रतिस्पर्धा ने सामूहिक विनाश का चरम संकट उपस्थित कर दिया है। कवि के इस विचार से यह प्रतीत होता है कि वह विभिन्न देशों के आपसी टकराहट के कारण पृथ्वी के विनाश के शीर्ष पर पहुँचने से चिंतित है। अणु–युद्धों और स्टारवार की आशंका से उसकी चिंता बहुत बढ़ गई है। कवि को एक आशंका बार–बार सताती है कि आपसी संघर्ष और अणु–परमाणु की मार से कहीं पूरी पृथ्वी का ही नाश न हो जाए। पृथ्वी की अस्मिता और मानव जीवन को बचाना ही कवि का लक्ष्य है, क्योंकि यदि वही नहीं बचा तो सम्पूर्ण ऐतिहासिक और पुरातात्विक धरोहरों का अंत हो जायेगा। इसलिए कवि कल्पान्तर में उसका पक्ष लेता हे, जो पृथ्वी और उसकी संस्कृति का हिमायती है।

निष्कर्ष :

यथार्थवाद ही आज एकमात्र प्रकट साहित्य है, जिसके द्वारा रचनात्मक लेखक सत्य के साथ अपना संग्राम जीतते हैं। सत्य की जो मनचाही कल्पना कर ली जा रही है, उससे तो ऐसा लगता है कि भविष्य में वास्तविक सत्य का गला ही घुँट जायेगा। यथार्थवाद वास्तविक सत्य तक पहुँचने का साधन मात्र है, वह साध्य कभी भी नहीं हो सकता। वास्तविकता की निष्कपट अभिव्यक्ति ही यथार्थवाद का लक्ष्य है।

संदर्भ एवं आधार ग्रंथ :–

1. कल्पांतर : गिरिजा कुमार माथुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. शम्बूक : जगदीश गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद।
3. पाषाणी : आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, निराला निकेतन, मुजफ्फरपुर, बिहार।
4. पहचान और परख : डॉ0 मृत्युंजय उपाध्याय, शंकर प्रकाशन, धनबाद।
5. अंधायुग : धर्मवीर भारती, किताब महल, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।
6. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृतियाँ : डॉ0 नगेन्द्र गौतम, बुक डिपो, नई दिल्ली।
7. आधुनिक कविता : प्रकृति और परिवेश, डॉ0 हरिचरण शर्मा, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर।
8. संशय की रात : नरेश मेहता, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गॉधी मार्ग, इलाहाबाद।
9. कविता के नये प्रतिमान : डॉ0 नामवर सिंह, राजमहल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. तार–सप्तक : स0 अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved